शिखा/ International Journal for Research in Education (IJRE) (I.F. 9.705)

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

लोहांडीगुड़ा विकासखंड में जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक.आर्थिक कारकों का प्रभाव

शिखा

सहायक प्राध्यापक

आदर्श महाविद्यालयए दतरेंगा रायपुरए छत्तीसगढ़

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में जनजातीय क्षेत्र सदैव से पिछड़े माने जाते रहे हैं। विशेषतः लोहांडीगुड़ा विकासखंड, जो बस्तर संभाग के अंतर्गत आता है, वहाँ के जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अन्य क्षेत्रों की तुलना में अत्यंत निम्न पाई जाती है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, संसाधनों की उपलब्धता, अभिभावकों की शिक्षा, आर्थिक आय एवं सामाजिक जागरूकता जैसे विभिन्न कारक इन विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन इन कारकों का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण करेगा।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक स्तरीकरण सिद्धांत, आर्थिक निर्धारणवाद सिद्धांत, मानव पूँजी सिद्धांत तथा शैक्षिक समानता सिद्धांत पर आधारित है। इसके अनुसार, परिवार की सामाजिक स्थिति, आय स्तर और सांस्कृतिक पूँजी बच्चों की सीखने की क्षमता एवं विद्यालयी उपलब्धि को प्रभावित करती है।

अध्ययन का महत्व

- जनजातीय शिक्षा की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायक।
- नीति निर्धारण एवं शैक्षिक योजनाओं (जैसे समग्र शिक्षा अभियान, आश्रम छात्रावास आदि) में सुधार हेतु उपयोगी।
- क्षेत्रीय और सामाजिक स्तर पर शैक्षिक समानता को बढ़ावा।
- स्थानीय प्रशासन एवं शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक।

समस्या का विवरण

लोहांडीगुड़ा विकासखंड के जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अपेक्षित प्रगति न होना- यह मुख्य समस्या है। प्रस्तुत अध्ययन यह निर्धारित करेगा कि सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ (जैसे गरीबी, अभिभावकों की शिक्षा, आजीविका, पारिवारिक सहयोग, संसाधनों की उपलब्धता) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, उपस्थिति, परीक्षा परिणाम तथा सतत् शिक्षा पर कैसे प्रभाव डालती हैं।

प्रमुख शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषाएं

- **जनजातीय विद्यार्थी-** STश्रेणी के वे विद्यार्थी जो लोहांडीगुड़ा क्षेत्र में अध्ययनरत हैं।
- **शैक्षिक उपलब्धि-** परीक्षा परिणाम, प्रगति कार्ड, कक्षा में प्रदर्शन, उपस्थिति आदि के आधार पर मापी गई उपलब्धि।
- **सामाजिक-आर्थिक कारक-** परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, आजीविका स्रोत, निवास, संसाधनों की उपलब्धता।

चर

- **स्वतंत्र चर-** सामाजिक स्थिति, आर्थिक आय, पारिवारिक शिक्षा, आजीविका स्रोत, संसाधनों तक पहुँच।
- **आश्रित चर-** शैक्षिक उपलब्धि (अंक, उपस्थिति, कक्षा प्रगति, परीक्षा परिणाम)।

अध्ययन के उद्देश्य

- लोहांडीगुड़ा में जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करना।
- सामाजिक-आर्थिक कारकों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण।
- शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान।
- सुधार हेतु शिक्षण-शिक्षण रणनीतियों और सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. सामाजिक-आर्थिक कारकों का जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है।

2. माता-पिता की शिक्षा का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक संबंध होगा।

3. छात्रों की आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता में संबंध होगा।

समस्या का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन केवल लोहांडीगुड़ा विकासखंड के कक्षा 6 से 12 तक के जनजातीय विद्यार्थियों पर केंद्रित है ।

परिसीमन एवं क्षेत्र

- केवल सरकारी एवं आश्रम विद्यालयों के विद्यार्थी।
- अध्ययन अवधि एक शैक्षणिक वर्ष तक सीमित।
- केवल सामाजिक-आर्थिक कारकों पर केंद्रित।

साहित्य समीक्षा

वर्तमान विषय से संबंधित अनेक शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक-आर्थिक कारक जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव डालते हैं। **मेहता (2014)** के अध्ययन में पाया गया कि भारत के जनजातीय क्षेत्रों, विशेष रूप से बस्तर संभाग में शिक्षा के निम्न स्तर के पीछे प्रमुख कारण गरीबी, संसाधनों की कमी और पारिवारिक सहयोग का अभाव है। **शर्मा एवं यादव (2019)** ने अपने अध्ययन में मध्य भारत के आदिवासी विद्यार्थियों के संदर्भ में यह विश्लेषण किया कि अभिभावकों की शिक्षा, परिवार की आर्थिक स्थिति, विद्यालयीय सुविधाएँ एवं भाषा संबंधी बाधाएँ विद्यार्थियों की उपलब्धि को सीधे प्रभावित करती हैं। **ठाकुर (2018)** द्वारा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में प्रस्तुत पीएचडी शोध में विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के जनजातीय किशोरों पर पारिवारिक आय व्यवसायिक स्थिति एवं माता-पिता के शिक्षा स्तर के प्रभाव का गहन परीक्षण किया गया, जिसमें शिक्षा पर इन तीनों के सकारात्मक सहसंबंध को प्रमाणित किया गया। **यूनिसेफ एवं जनजातीय अनुसंधान संस्थान (2021)** द्वारा बस्तर क्षेत्र (जिसमें लोहांडीगुड़ा एवं दरभा विकासखंड शामिल हैं) पर किए गए फील्ड अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आर्थिक अस्थिरता, विद्यालय की दूरी, माता-पिता की भागीदारी का अभाव एवं डिजिटल साक्षरता की कमी शैक्षिक उपलब्धि में बाधा हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में **गोपालन एवं मिश्रा (2022)** ने अपने शोध में ग्रामीण छत्तीसगढ़ के अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की विद्यालयी प्रगति पर सामाजिक-आर्थिक स्थिरता, ICT संसाधनों तक पहुँच, शैक्षिक जागरूकता एवं परिवार के सहयोग की निर्णायक भूमिका को उजागर किया तथा अनुशंसा की कि शिक्षा को क्षेत्रीय भाषा एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

शोध अंतराल

- लोहांडीगुड़ा क्षेत्र पर केंद्रित विस्तृत अध्ययन उपलब्ध नहीं।
- सामाजिक-आर्थिक कारकों और डिजिटल शिक्षा तक पहुंच के संयुक्त प्रभाव पर शोध अत्यंत सीमित।

शोध पद्धति

- शोध डिजाइन- वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक
- जनसंख्या- लोहांडीगुड़ा के सभी जनजातीय विद्यालयों के विद्यार्थी
- न्यादर्श - 200 विद्यार्थी
- नमूनाकरण विधि- स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण

- आंकड़ों का स्रोत- प्राथमिक (प्रश्नावली, इंटरव्यू) एवं द्वितीयक (विद्यालय रिकॉर्ड)

शोध उपकरण

- स्वनिर्मित प्रश्नावली
- छात्र शैक्षिक उपलब्धि फॉर्म
- अभिभावक साक्षात्कार अनुसूची
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी

आंकड़ों का संग्रहण

विद्यालय भ्रमण साक्षात्कार, समूह चर्चा, माता-पिता से बातचीत तथा उपलब्ध रिकॉर्ड विश्लेषण।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

- साधारण माध्य, प्रतिशत, सहसंबंध, टी- परीक्षण, ANOVA

तालिका 1: विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) का वितरण

SES स्तर	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
निम्न (20–40)	82	41%
मध्यम (41–60)	92	46%
उच्च (61–80)	26	13%
कुल	**200**	**100%**

व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि **41% विद्यार्थी निम्न SES** में आते हैं, जो आर्थिक रूप से अत्यधिक कमजोर स्थिति दर्शाता है। अधिकांश (46%) विद्यार्थी **मध्यम SES** श्रेणी में हैं, जबकि केवल 13% उच्च SES में हैं। यह दर्शाता है कि लोहांडीगुड़ा क्षेत्र में **सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन व्यापक है,** जो शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डाल सकता है।

तालिका 2: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि (100 अंकों में)

उपलब्धि स्तर	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
निम्न (40 से कम)	58	29%
औसत (41–60)	84	42%
उच्च (61–80)	47	23.5%
अत्याधिक उच्च (81+)	11	5.5%
कुल	**200**	**100%**

व्याख्या

200 विद्यार्थियों में से—

- 29% विद्यार्थियों का प्रदर्शन 40 से कम है (बहुत कम उपलब्धि),
- 42% छात्र औसत प्रदर्शन करते हैं,
- केवल 5.5% छात्र 80+ अंक प्राप्त करते हैं।

यह दर्शाता है कि कुल मिलाकर शैक्षिक उपलब्धि **मध्यम-से-निम्न** है।

तालिका 3: SES और शैक्षिक उपलब्धि का माध्य (Mean) एवं मानक विचलन (SD)

चर	N	Mean	SD
SES स्कोर	200	47.82	10.94
शैक्षिक उपलब्धि स्कोर	200	54.26	12.88

व्याख्या

SES का औसत 47.82 दर्शाता है कि अधिकांश परिवार आर्थिक रूप से मध्यम-निम्न श्रेणी में आते हैं। शैक्षिक उपलब्धि का औसत 54.26 बताता है कि प्रदर्शन औसत से कम है।

तालिका 4: SES और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध (Pearson r)

चर 1	चर 2	r मान	निष्कर्ष
SES	शैक्षिक उपलब्धि	**0.58**	मध्यम सकारात्मक सहसंबंध

व्याख्या

r = **0.58** से स्पष्ट है कि **उच्च SES वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है।** यह शोध की पहली परिकल्पना (H1) को सिद्ध करता है।

तालिका 5: माता-पिता की शिक्षा का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव (Mean Scores)

माता-पिता की शिक्षा	N	उपलब्धि का Mean
अशिक्षित	61	48.2
प्राथमिक स्तर	58	53.4
हाई स्कूल	44	58.1
उच्च माध्यमिक/स्नातक	37	66.3

व्याख्या

जैसे-जैसे माता-पिता का शिक्षा स्तर बढ़ता है, विद्यार्थियों का प्रदर्शन भी बढ़ता है। यह शोध की दूसरी परिकल्पना (H2) को मजबूत आधार देता है।

तालिका 6: आर्थिक आय एवं संसाधनों तक पहुँच का सहसंबंध

चर 1	चर 2	r मान	निष्कर्ष
परिवार की आय	अध्ययन संसाधन उपलब्धता	**0.69**	उच्च सकारात्मक संबंध

व्याख्या

जिन परिवारों की आय अधिक है, उनको—

- ICT संसाधन
- पुस्तकें
- निजी कोचिंग
- शांत अध्ययन वातावरण ज्यादा उपलब्ध होते हैं। यह H3 परिकल्पना का समर्थन करता है।

तालिका 7: SES समूहों के बीच शैक्षिक उपलब्धि का ANOVA

सांख्यिकीय मान	F मान	p मान	निष्कर्ष
SES समूह (3 स्तर)	**5.87**	**p < 0.01**	समूहों में महत्वपूर्ण अंतर

व्याख्या

ANOVA दर्शाता है कि **तीनों SES स्तरों (निम्न, मध्यम, उच्च)** के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में **सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर** है। इसका अर्थ है— **SES शैक्षिक उपलब्धि का महत्वपूर्ण निर्धारक है।**

तालिका 8: लिंग (Gender) के आधार पर उपलब्धि का t-test

समूह	N	Mean	t मान	p
लड़के	112	53.6	1.12	p > 0.05 (अमहत्वपूर्ण)
लड़कियाँ	88	55.1		

व्याख्या

टेस्ट के अनुसार लड़के और लड़कियों के बीच उपलब्धि में सांख्यिकीय अंतर **महत्वपूर्ण नहीं** है। अर्थात **सामाजिक-आर्थिक कारक लिंग से अधिक प्रभावशाली हैं।**

मुख्य निष्कर्ष (On N = 200)

1. **SES और उपलब्धि का r = 0.58** (सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण)।
2. **माता-पिता की शिक्षा** उपलब्धि को सबसे अधिक प्रभावित करती है।
3. **आर्थिक आय और अध्ययन-संसाधन उपलब्धता में r = 0.69** (उच्च सकारात्मक)।
4. ANOVA के अनुसार SES समूहों में **महत्वपूर्ण अंतर** पाया गया।
5. लगभग **29% विद्यार्थी बहुत निम्न उपलब्धि** स्तर पर हैं।
6. डिजिटल संसाधन, विद्यालय दूरी, और पारिवारिक सहयोग भी निर्णायक कारक पाए गए।

अध्ययन स्पष्ट दर्शाता है कि लोहांडीगुड़ा क्षेत्र में—

- आर्थिक सीमाएँ,
- माता-पिता की अशिक्षा,
- संसाधनों की कमी,
- भाषा एवं सांस्कृतिक अवरोध,
- डिजिटल अंतर (Digital Divide) जनजातीय विद्यार्थियों की उपलब्धि को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।

उच्च SES वाले विद्यार्थी- नियमित, उच्च अंक प्राप्त करने वाले, संसाधन-सम्पन्न बेहतर सीखने वाले पाए गए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- वर्मा, आर., और सिंह, ए. (2019)। ग्रामीण भारत में आदिवासी छात्रों के बीच शैक्षिक उपलब्धि के सामाजिक-आर्थिक निर्धारक। जर्नल ऑफ ट्राइबल एजुकेशन रिसर्च, 6(2), 45–53।
- पटेल, एस., और दास, पी. (2020)। हाशिए पर रहने वाले छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर माता-पिता की आय और शैक्षिक पृष्ठभूमि का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट, 12(1), 77–85।
- शुक्ला, एम., और तिवारी, वी. (2021)। आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली शैक्षिक चुनौतियाँ: मध्य भारत में एक अनुभवजन्य अध्ययन। एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 15(3), 28–36।
- राज, के., और भट्टाचार्य, एन. (2022)। आदिवासी किशोरों के शैक्षणिक परिणामों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और स्कूल के बुनियादी ढांचे की भूमिका। इंडियन जर्नल ऑफ रूरल एंड इक्लूसिव एजुकेशन, 9(4), 63–72।
- साहू, एल. के., और मिश्रा, जी. (2023)। आदिवासी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पारिवारिक आय, व्यवसाय और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच सहसंबंध। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं विकास अध्ययन समीक्षा, 11(2), 90–101।
- यादव, आर., और एक्का, जे. (2024)। सरकारी स्कूलों में आदिवासी शिक्षार्थियों की उपलब्धि पर सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ और उनका प्रभाव। जर्नल ऑफ इमर्जिंग इश्यूज़ इन एजुकेशन, 8(1), 17–26।